गुरू चालीसा

श्री श्री १००८ श्री स्वामी
आत्मप्रकाशजी महाराज

सद्गुरुदेव स्वामी
श्री अमृत प्रकाशजी महाराज

आनंद धाम आश्रम

।। ॐ श्री परमात्मने नमः ।।

गुरू चालीसा

बन्दउं सद्गुरु परम पद, दीनबन्धु नरदेह ।
भवसागर - कृपाकर तारैं जीव सनेह ।।

जय जय गुरुवर दीन दयाला ।
भगत बछल अनुपम प्रतिपाला ।।
गौर सरीर गेरु पट राजे ।
तीन लोक तन तेज बिराजै ।।
सद्गुरु सुख स्वरुप सुखकारी ।
कृपानिधान भगत दुःख हारी ।।
सद्गुरु ज्ञान भक्त मन रंजन ।
विद्या रुप जगत तम भंजन ।।
सद्गुरु उत्तम तत्व अनूपा ।
सब - तीरथ - भूपन कर भूपा ।।
सद्गुरु तीरथराज प्रयागा ।
जहं जहं जाहिं कोटि अघ भागा ।।
सद्गुरु तीरथराज सुपावन ।
संसय विषय विकार नसावन ।।
सद्गुरु ज्ञान रुप अवतारा ।
सद्गुरु मूरत ब्रह्म विचारा ।।
सद्गुरु करुणा रुप महाना ।
सद्गुरु तारत मूढ़ अजाना ।।
सद्गुरु पावन वेद स्वरुपा ।
सद्गुरु आगम निगम अनूपा ।।
सद्गुरु नित्य विमल सूचि व्यापक ।
सद्गुरु रुप सुमंगल दायक ।।
सद्गुरु ब्रत अजपा जप दाना ।
सद्गुरु पावन मन्दिर ज्ञाना ।।

सद्गुरु सरजु जमुना गंगा ।
सद्गुरु सुरसति बहत अभंगा ।।
सद्गुरु करुणा अमृत सागर ।
सद्गुरु सदगुण पावन सागर ।।
सद्गुरु प्रभु परम अविनासी ।
सद्गुरु मुक्ति प्रदायक काशी ।।
सद्गुरु आनन्द मंगल मूला ।
सद्गुरु नासक सब भव सूला ।।
सद्गुरु प्रभु समरथ जग माहीं ।
सद्गुरु सम दाता जग नाहीं ।।
सद्गुरु ज्ञान दीप हिय जारैं ।
सद्गुरु काम क्रोध रिपु मारै ।।
सद्गुरु सेवक पालन हारा ।
सद्गुरु सहजै जग दुःख टारा ।।
सद्गुरु भगत अचल सुखदायक ।
आनन्दरुप जगत जननायक ।।
सद्गुरु सुखदाता दुःख हर्ता ।
ब्रह्मस्वरुप जगत जन भर्ता ।।
सद्गुरु तैजस नित्य निरंजन ।
ज्योती रुप जगत भयभंजन ।।
सद्गुरु व्यापक अचल अनन्ता ।
अजर अमर अनादि भगवन्ता ।।
सद्गुरु भगत अचल हितकारी ।
नित्यानन्द जगत भय हारी ।।
सद्गुरु सब भक्तन कर स्वामी ।
सुगन सुविग्रह जग महं नामी ।।
सद्गुरु सत - मारग - निरदेसक ।
सद्गुरु जग हित मानव देवक ।।
सद्गुरु महा परम परतापी ।
सद्गुरु तारत जग सब पापी ।।

सद्गुरु कोमल सरल सुभाउ ।
सद्गुरु कृपा मिले निज भाऊ ।।
सद्गुरु नासैं सकल विकारा ।
सद्गुरु भगत - कलेस निवारा ।।
सद्गुरु अमिय धार बरसावै ।
सद्गुरु प्रेम नदी नहलावै ।।
सद्गुरु काटैं बन्धन माया ।
सद्गुरु पावन - वेद कहाया ।।
सद्गुरु सुचि उपदेश अनूपा ।
सद्गुरु नासै तम भवकूपा ।।
सद्गुरु मिले मनोरथ पूरे ।
सद्गुरु सन नाता दृढ़ जूरे ।।
सद्गुरु पद - अम्बुज सुचि पूजा ।
सद्गुरु बिन कोई और न दूजा ।।
सद्गुरु महिमा जग नहिं गाई ।
तिन उपदेस पार जन होई ।।
परमहंस गुरु हंस सवारी ।
अस नित ध्यान उपद्रवहारी ।।
देवन सबहिं विपत्ति आए ।
निज गुहार गुरु सरन सुनाये ।।
पल महं काटे विपती भारी ।
मारि निसाचर संकट टारी ।।
नाग असुर सुर गुरु गुन गावै ।
सन्त भगत नित ध्यान लगावें ।
गुरु की महिमा अपरम्पारा ।
सकल जीव भय - ताप - बुहारा ।।

सन्त सिरोमनि सद्गुरु, स्वामी आत्मप्रकाश ।
देत सदा सुख जीव कहं, तमस अन्ध करि नास ।।
सिव चेरा तुमरो प्रभु, करहुं हृदय महं बास ।
मंगलमय प्रभु हरहुं दुःख, स्वामी आत्मप्रकाश ।।

श्री गुरूदेव की आरती

ॐ जय प्रभु अविनाशी, स्वामी जय प्रभु अविनाशी ।
आरती जन दुःख भंजन, घट घट के वासी ।।

सबके भीतर सबके प्रेरक, सबके प्रकाशी ।
सबको सब विधि देते, आनन्द की राशी ।।

जनम मरन से डरके, शरण में जो आसी ।
ज्ञान और ध्यान सिखाकर, काटो यम फाँसी ।।

मान बड़ाई तज जो चरणन चित्त लासी ।
पाप ताप और दुविधा, सब ही मिट जासी ।।

ज्ञान की ज्योति जगा के भ्रम तम के नाशी ।
घट में सब दरसावो, मथुरा और काशी ।।

जनम - जनम से सोवत आयो, मोह नींद खासी ।
दीनानाथ जगाओ, तुमरो गुण गासी ।।

अपना रुप लखाओ दर्शन अभिलाषी ।
प्रेम भक्ति वर दीजो, मैं बलि - बलि जासी ।।

आज्ञा माने जो आपकी होकर विश्वासी ।
सुख शान्ति मन आवें, मुक्ति फल पासी ।।

समर्पण का दोहा

तुमरी चीज तुम्हारे आगे, भेंट करुँ ममदेव ।
दया करो, हे दयानिधी, सब देवन के देव ।।

प्रार्थना

हे परम पिता परमात्मा
सभी प्राणी हो सुखी,
सभी प्राणी हो निरोग ।
सभी सदाचारी बनें,
सभी प्राणी हो निःशोक ।।
दुर्गुणों का नाश हो प्रभु,
सद्गुणों का विकास हो प्रभु ।।
दुःख में धीरज रहे प्रभु,
सुख में उदार हो प्रभु ।।
प्राणी मात्र का कल्याण हो प्रभु,
तेरी हमेशा याद रहे प्रभु ।।
तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभु,
सर्वदा सर्व दशा में परिपूर्ण हो प्रभु ।
ॐ शन्तिः !! ॐ शन्तिः !! ॐ शन्तिः ।।

त्वमेव माता चपिता त्वमेव ।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव ।
त्वमेव सर्व मम देव देव ।।

स्वामी बलजीत आनंद धाम
राधा कृष्ण मन्दिर, तपोवन
लक्ष्मण झूला, टेहरी गढ़वाल
ऋषिकेश - 249192, उत्तराखंड
मो. 9557346475

BAMBASUKI : 9830151002, 6291183585